

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग, अवसर और चुनौतियाँ

डॉ. पूनम सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

श्रीमती विद्यावती कॉलेज ऑफ एजुकेशन, झाँसी

सारांश (Abstract)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धियों में से एक है। शिक्षा जैसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण क्षेत्र में इसका प्रवेश नई संभावनाओं और चुनौतियों को जन्म देता है। AI आधारित शिक्षा प्रणाली न केवल विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से शिक्षित करने में सक्षम है, बल्कि यह अध्यापकों के कार्यभार को भी कम करती है और मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक सटीक बनाती है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग, इसके अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण करना है।

परिचय

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार है। आधुनिक समय में ज्ञान और तकनीक का महत्व बढ़ने के साथ-साथ शिक्षा की पद्धतियाँ भी बदल रही हैं। पारंपरिक शिक्षण पद्धति जहाँ शिक्षक-केन्द्रित थी, वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने शिक्षा को विद्यार्थी-केन्द्रित बनाने का कार्य किया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सामान्य शब्दों में इस प्रकार समझा जा सकता है कि यह मशीनों और सॉफ्टवेयर को इंसानों की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने योग्य बनाती है। शिक्षा क्षेत्र में AI का उपयोग छात्रों की सीखने की गति और शैली के अनुरूप सामग्री प्रदान करने, मूल्यांकन करने, प्रशासनिक कार्यों को सरल बनाने और अध्यापक को सहायता प्रदान करने के लिए किया जा रहा है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

शिक्षा में AI के उपयोग पर विश्व स्तर पर कई शोध हुए हैं।

UNESCO (2022) ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि AI शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और सबके लिए शिक्षा उपलब्ध कराने में सहायक हो सकती है।

Gupta (2020) के अध्ययन के अनुसार AI आधारित शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों की रुचि और क्षमता के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराती है, जिससे उनका अधिगम अधिक प्रभावी बनता है।

Sharma (2021) का मानना है कि AI अध्यापकों को मूल्यांकन और प्रशासनिक कार्यों से मुक्त करके उन्हें रचनात्मक और संवादात्मक गतिविधियों में अधिक समय लगाने का अवसर देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी तकनीक आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने और डिजिटल लर्निंग को मुख्यधारा में शामिल करने पर जोर दिया गया है।

इन सभी अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के भविष्य को नई दिशा देने में सक्षम है।

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग

व्यक्तिगत शिक्षण (Personalized Learning):

हर विद्यार्थी की क्षमता और रुचि अलग होती है। AI आधारित प्लेटफॉर्म प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति और योग्यता के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

स्मार्ट मूल्यांकन (Smart Assessment):

पारंपरिक परीक्षाओं में समय और श्रम अधिक लगता है। AI आधारित सिस्टम विद्यार्थियों के उत्तरों का स्वतः विश्लेषण करके तुरंत परिणाम दे सकते हैं।

चैटबॉट्स और वर्चुअल ट्यूटर:

AI आधारित चैटबॉट्स विद्यार्थियों को 24x7 सहायता प्रदान करते हैं। वे प्रश्नों का उत्तर देते हैं और अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

भविष्यवाणी और डाटा विश्लेषण:

AI छात्रों की प्रगति का रिकॉर्ड रखकर उनके भविष्य के प्रदर्शन की भविष्यवाणी कर सकता है।

प्रशासनिक कार्यों में सहयोग:

उपस्थिति, प्रवेश प्रक्रिया और समय-सारणी बनाने जैसे कार्य AI आधारित टूल्स से आसानी से हो सकते हैं।

अवसर (Opportunities)

शिक्षा तक समान पहुँच:

AI दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने में मदद कर सकता है।

लागत और समय की बचत:

AI आधारित प्लेटफॉर्म अध्यापकों और छात्रों दोनों के समय और संसाधनों की बचत करते हैं।

शिक्षण को रोचक और इंटरैक्टिव बनाना:

गेमिफिकेशन, वर्चुअल रियलिटी और सिमुलेशन आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय बनाती है।

अध्यापकों की सहायता:

AI अध्यापकों को थकाऊ कार्यों से मुक्त करके उन्हें विद्यार्थियों के साथ संवाद और मार्गदर्शन में अधिक समय देने का अवसर देता है।

वैश्विक शिक्षा का अवसर:

इंटरनेट और AI आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से विद्यार्थी दुनिया के श्रेष्ठ संस्थानों और अध्यापकों से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

चुनौतियाँ (Challenges)

डिजिटल विभाजन (Digital Divide):

ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के पास AI आधारित शिक्षा का लाभ उठाने के साधन नहीं हैं।

डेटा गोपनीयता और सुरक्षा:

विद्यार्थियों का व्यक्तिगत डाटा सुरक्षित रखना एक बड़ी चुनौती है।

रचनात्मकता में कमी का खतरा:

यदि विद्यार्थी AI पर अत्यधिक निर्भर हो जाएँ, तो उनकी रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच कम हो सकती है।

प्रशिक्षण की आवश्यकता:

अध्यापकों और विद्यार्थियों को AI टूल्स का उपयोग करना सिखाना आवश्यक है।

आर्थिक चुनौतियाँ:

AI आधारित तकनीक महंगी है, जिसे सभी संस्थान वहन नहीं कर सकते।

केस स्टडी और उदाहरण

भारत में Byju's और Unacademy:

ये दोनों प्लेटफॉर्म AI आधारित शिक्षा प्रदान करते हैं और लाखों विद्यार्थियों को लाभ पहुँचा रहे हैं।

गूगल क्लासरूम और Microsoft Teams:

ये प्लेटफॉर्म AI आधारित टूल्स से शिक्षा को अधिक व्यवस्थित और प्रभावी बनाते हैं।

विदेशों में Coursera और Khan Academy:

ये संस्थान AI का उपयोग करके विद्यार्थियों को व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करते हैं।

भविष्य की संभावनाएँ

- भविष्य में शिक्षा का स्वरूप और अधिक तकनीकी होगा।
- AI आधारित वर्चुअल शिक्षक सामान्य हो जाएँगे।
- वर्चुअल रियलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) से शिक्षा और भी अनुभवात्मक होगी।
- प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनुकूलित पाठ्यक्रम बनाए जा सकेंगे।
- शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि हर घर तक पहुँच जाएगी।

निष्कर्ष

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग आज की आवश्यकता है। यह न केवल

विद्यार्थियों के लिए सीखने की प्रक्रिया को सरल और व्यक्तिगत बनाता है, बल्कि अध्यापकों और संस्थानों को भी अधिक प्रभावी और दक्ष बनाता है। हालाँकि इसके सामने अनेक चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें दूर करना आवश्यक है। यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला सकती है।

संदर्भ (References)

- I. शर्मा, आर. (2021). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और शिक्षा का भविष्य. दिल्ली: शैक्षिक प्रकाशन।
- II. गुप्ता, एस. (2020). भारतीय शिक्षा में डिजिटल लर्निंग और एआई.
- III. यूनेस्को (2022). शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: चुनौतियाँ और अवसर।
- IV. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). भारत सरकार।



Contributor Details:

डॉ. पूनम सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
श्रीमती विद्यावती कॉलेज ऑफ एजुकेशन, झाँसी